

यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन - संख्या सोलह

सात गरजों का अनावरण: प्रकाशितवाक्य और गुप्त इतिहास का भविष्यवाणीपरक विश्लेषण

Jeff Pippenger

2023-11-15

हम प्रकाशितवाक्य के अध्याय ग्यारह से तेरह में प्रस्तुत सात गर्जनाओं के छिपे हुए इतिहास द्वारा पहचाने गए भविष्यसूचक घटनाक्रम को क्रमवार प्रस्तुत कर रहे हैं। हम अभी तक इन घटनाओं के विकास में उस बिंदु तक नहीं पहुँचे हैं, जहाँ हम प्रोटेस्टेंटवाद के सींग और गणतंत्रवाद के सींग के इतिहास को एक-दूसरे पर रखकर देखेंगे। न ही हमने अभी तक ऐसी समझ का आधार तैयार किया है कि "मध्यरात्रि की पुकार" के संदेश में इस्लाम की भूमिका को ठीक-ठीक चिन्हित कर सकें। फिर भी, इन घटनाओं से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य है, जो यह बताता है कि जब कोई व्यक्ति उन सत्यों को समझता है जो खोले जा रहे हैं, तो उसे क्या करना चाहिए। प्रकाशितवाक्य का आशीर्वाद उन लिखी हुई बातों को "पालने" की जिम्मेदारी भी शामिल करता है।

जिस इतिहास की मुहरें खुल रही हैं, उसकी धारा उन लोगों तक ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति पहुँचा रही है, जो उसमें लिखी बातों को सुनते, पढ़ते और उनका पालन करते हैं। इसलिए अब समय है कि हम यशायाह के अंतिम भविष्यवाणीपूर्ण आख्यान और प्रकाशितवाक्य के अध्याय ग्यारह से तेरह पर अपने विचार-विमर्श से हटकर, उस "साढ़े तीन दिनों" के महत्व को स्थापित करें, जब एलिय्याह और मूसा 'मरी हुई सूखी हड्डियों की घाटी' से होकर गुजरने वाले 'सूचना सुपर हाईवे' की सड़क पर मृत पड़े थे। अब हम जिसकी पहचान करेंगे, वह है "मरुभूमि" का प्रतीकवाद।

पिछले लेख में हमने घटनाओं के उस क्रम के चार भविष्यसूचक साक्षियों की पहचान की थी, जो सात गर्जनाओं के गुप्त इतिहास द्वारा स्थापित किया गया है। मसीह की प्रतिमा की रेखा, दो गवाहों की रेखा, पशु की प्रतिमा की रेखा और उत्तर के छद्म राजा की रेखा।

उत्तर के नकली राजा की कालरेखा का दूसरा आधा 538 ईस्वी में पापाई सत्ता के सशक्तिकरण से शुरू होता है। तब पापाई सत्ता, जो उत्तर का आध्यात्मिक नकली राजा है, ने बारह सौ साठ वर्षों तक आध्यात्मिक यरूशलेम और आध्यात्मिक इस्राएल को पददलित किया।

और वे तलवार की धार से गिरेंगे, और सब जातियों में बंदी बनाकर ले जाए जाएंगे; और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए, तब तक यरूशलेम अन्यजातियों द्वारा रौंदा जाएगा। लूका 21:24.

यूहन्ना से पवित्रस्थान और सेना दोनों को नापने को कहा गया, पर उसे आँगन को छोड़ देने के लिए भी कहा गया, क्योंकि वह बारह सौ साठ वर्ष तक अन्यजातियों को दे दिया गया था।

और मुझे छड़ी के समान एक सरकण्डा दिया गया; और स्वर्गदूत खड़ा होकर बोला, उठ, और परमेश्वर के मंदिर को, और वेदी को, और उसमें उपासना करने वालों को नाप। परन्तु जो आँगन मंदिर के बाहर है, उसे छोड़ दे, और उसे नाप मत; क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है; और पवित्र नगर को वे बयालिस महीने तक पैरों तले रौंदेंगे। प्रकाशितवाक्य 11:1, 2.

यूहन्ना और लूका गवाही देते हैं कि अन्यजाति लोग "यरूशलेम" को "पैरों तले रौंदते" हैं, "बयालिस महीनों" तक। यूहन्ना अवधि बताता है, और लूका इतिहास के समापन को चिह्नित करता है। ये दोनों साक्षी दानियेल के अध्याय आठ और पद तेरह के प्रश्न को संबोधित कर रहे हैं।

तब मैंने एक पवित्र जन को बोलते सुना; और दूसरे पवित्र जन ने उस बोलने वाले पवित्र जन से कहा, "यह दर्शन, जो प्रतिदिन के बलिदान और उजाड़ने वाले अधर्म के विषय में है, कब तक रहेगा, कि पवित्रस्थान और सेना दोनों

को पददलित होने के लिए सौंप दिया जाए?" दानिय्येल 8:13.

यह प्रश्न कि पवित्रस्थान और 'host' को कितने समय तक पैरों तले रौंदा जाना था, उन दो उजाड़नेवाली शक्तियों की पहचान करता है जो यरूशलेम को रौंदने का कार्य पूरा करेंगी, जिसे दानिय्येल में 'sanctuary' और 'host' के रूप में दर्शाया गया है। इस पद की सही, मूलभूत समझ, जैसा कि जे. एन. एंड्रूज़ ने व्यक्त की, यह है कि यह पद दो उजाड़नेवाली शक्तियों की पहचान करता है, जिन्होंने पवित्रस्थान और 'host' दोनों को रौंदा। इस पद में पहचानी गई पहली उजाड़नेवाली शक्ति पैगनवाद है, और दूसरी पोपवाद। 'host' शब्द दानिय्येल की वह अभिव्यक्ति है जिसे यूहन्ना मन्दिर में—अर्थात् यरूशलेम में—'worshippers' के रूप में पहचानता है।

दानिय्येल 8 में दो 'विनाश' हैं। — यह तथ्य जोसियाह लिच ने इतना स्पष्ट कर दिया है कि हम उनके ही शब्द प्रस्तुत करते हैं:

'दैनिक बलिदान' अंग्रेज़ी पाठ का वर्तमान रूप है। परंतु मूल पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे बलिदान कहा जा सके। यह बात सर्वत्र स्वीकार की गई है। यह अनुवादकों द्वारा उस पर थोपा गया एक व्याख्यात्मक जोड़ या निर्माण है। सही पाठ यह है, 'दैनिक और उजाड़ का अतिक्रमण', जहाँ 'दैनिक' और 'अतिक्रमण' 'और' द्वारा एक साथ जुड़े हैं; 'दैनिक उजाड़' और 'उजाड़ का अतिक्रमण'। ये दो विध्वंसकारी शक्तियाँ हैं, जिनका कार्य पवित्रस्थान और सेना को उजाड़ना था। — भविष्यवाणी संबंधी व्याख्याएँ, खंड 1, पृष्ठ 127.

यह स्पष्ट है कि पवित्रस्थान और सेना को 'नित्य' और 'उजाड़ करने वाले अपराध' के द्वारा पैरों तले रौंदा जाना था। पद 13 का सावधानीपूर्वक पठन इस बात को तय कर देता है। और यह तथ्य एक और बात स्थापित करता है, अर्थात्: कि ये दोनों विध्वंस वे दो प्रमुख रूप हैं जिनके द्वारा शैतान ने यहोवा की उपासना और कार्य को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया है। इन दो शब्दों के अर्थ के विषय में श्री मिलर की टिप्पणियाँ, और उस अर्थ का निर्धारण करने में स्वयं उनके द्वारा अपनाई गई पद्धति, निम्न शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत है:

दो विध्वंस मूर्तिपूजा और पापत्व हैं

"मैं आगे पढ़ता गया, और मुझे कोई अन्य स्थान नहीं मिला जहाँ यह ['नित्य'] पाया गया हो, सिवाय दानिय्येल में। तब मैंने [कॉनकॉर्डेंस की सहायता से] वे शब्द लिए जो उसके साथ जुड़े हुए थे, 'हटा देना'; 'वह हटा देगा'; 'नित्य'; 'उस समय से जब नित्य हटाया जाएगा', इत्यादि। मैं आगे पढ़ता गया, और सोचा कि मुझे इस पाठ पर कोई प्रकाश नहीं मिलेगा; अंततः मैं 2 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8 पर पहुँचा। 'क्योंकि अधर्म का भेद तो अभी से काम कर रहा है; केवल जो अब रोक रहा है, वही तब तक रोकेगा, जब तक कि वह बीच से हटाया न जाए, और तब वह दुष्ट प्रकट होगा,' इत्यादि। और जब मैं उस पद पर पहुँचा, ओह! सत्य कितना स्पष्ट और महिमामय प्रतीत हुआ! वहीं है! वही 'नित्य' है! तो अब, पौलुस 'जो अब रोक रहा है,' या बाधा डालता है, से क्या मतलब लेते हैं? 'पाप के मनुष्य' और 'दुष्ट' से पोपवाद का ही आशय है। तो, ऐसा क्या है जो पोपवाद के प्रकट होने में बाधा डालता है? अरे, वह तो मूर्तिपूजा है; तो फिर, 'नित्य' का अर्थ मूर्तिपूजा ही होना चाहिए।' -सेकंड एडवेंट मैनुअल, पृष्ठ 66।" जे. एन. एंड्रूज़, पवित्रस्थान और 2300 दिन, 33, 34।

लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस के 'सात गुना' की पूर्ति में, मूर्तिपूजा ने बारह सौ साठ वर्षों तक पवित्रस्थान और सेना को रौंदा, और फिर पोपसत्ता ने भी अतिरिक्त बारह सौ साठ वर्षों तक वही कार्य किया। लूका और यूहन्ना के अनुसार, पोपसत्ता ने 1798 में घातक घाव प्राप्त करने तक बारह सौ साठ वर्षों तक यरूशलेम को रौंदा था। 1798 में से बारह सौ साठ वर्ष घटाने पर 538 प्राप्त होता है। 538 में से बारह सौ साठ वर्ष घटाने पर 723 ईसा-पूर्व प्राप्त होता है, जब असीरिया, जो उस समय उत्तर का वास्तविक राजा था, ने इस्राएल के उत्तरी राज्य को दासता में ले गया।

यूहन्ना केवल उन एक हज़ार दो सौ साठ वर्षों का उल्लेख करता है जिनमें पापाई सत्ता ने पवित्रस्थान और सेना को रौंदा, परन्तु लूका उन दोनों एक हज़ार दो सौ साठ-वर्षीय अवधियों की चर्चा करता है जिनमें मूर्तिपूजा और पोपवाद ने यरूशलेम को रौंदा, क्योंकि वह कहता है, "जब तक कि अन्यजातियों के समयों की पूर्ति न हो जाए।" लूका यरूशलेम के रौंदे जाने को एक मात्र "समय" से अधिक बताता है, क्योंकि वह इसे "अन्यजातियों के समयों" की पूर्ति

कहता है।

निस्संदेह, 1856 में मिलेराइट एडवेंटवाद लाओदीकियाई अवस्था में आ गया, और सात वर्ष बाद उन्होंने लैव्यव्यवस्था अध्याय 26 के 'सात समय' के सत्य को अस्वीकार कर दिया, इसलिए एडवेंटवाद के लिए इन सरल बाइबिलीय तथ्यों को देख पाना असंभव है। मैं जिस तथ्य की ओर संकेत कर रहा हूँ, वह यह है कि सात गर्जनाओं का गुप्त इतिहास—जो तीन मार्गचिह्नों की पहचान कराता है और पहले व दूसरे मार्गचिह्न के बीच एक समयावधि, फिर दूसरे व तीसरे मार्गचिह्न के बीच दूसरी समयावधि को भी दर्शाता है—उत्तर के नकली राजा की भविष्यसूचक रेखा के भीतर दर्शाया गया है।

वह सिलसिला 723 ईसा पूर्व में शुरू हुआ, जब इस्राएल का उत्तरी राज्य, अशूर के राजा—जो वास्तव में 'उत्तर का राजा' था—के हाथों गुलामी में चला गया। फिर 538 ईस्वी में, आध्यात्मिक 'उत्तर का राजा' को शक्ति मिली, और उसने अगले बारह सौ साठ वर्षों तक आध्यात्मिक यरूशलेम को रौंदा, जब तक कि 1798 में उसे एक घातक घाव नहीं लगा। 723 ईसा पूर्व से 538 ईस्वी तक, जो शक्तियाँ इस्राएल को अधीनता में रखती रहीं, वे हमेशा मूर्तिपूजक शक्तियाँ थीं।

मसीह की रेखा यह दर्शाती है कि वर्ष 27 में उनके बपतिस्मा के समय सच्चे उत्तर के राजा का अभिषेक हुआ, और बारह सौ साठ भविष्यवाणी के दिन बाद, उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया। फिर उनके शिष्यों को सच्चे उत्तर के राजा का संदेश प्रस्तुत करने के लिए सशक्त किया गया, वर्ष 34 में स्तेफन पर पत्थर चलाए जाने तक। उनके सेवाकाल के पूरे बारह सौ साठ दिनों में केवल एक ही समय ऐसा था जब मसीह पैदल नहीं चले—जब वे विजयी प्रवेश में यरूशलेम में सवारी करके आए। अतः उन्होंने बारह सौ साठ दिनों तक यरूशलेम को रौंदा, और क्रूस के बाद उनके शिष्यों ने भी ऐसा ही किया। दोनों रेखाएँ—उत्तर के नकली राजा और मसीह, सच्चे उत्तर के राजा—ने बारह सौ साठ दिनों तक यरूशलेम और सेना को रौंदा।

मूर्तिपूजा, वंशगत यहूदियों की पृथ्वीस्थ पवित्रस्थान-सेवा की उपासना-व्यवस्था की एक नकली नकल थी, और पापावाद, आत्मिक यहूदियों की स्वर्गीय पवित्रस्थान-सेवा की एक नकली नकल है। मूर्तिपूजा के एक हज़ार दो सौ साठ वर्ष मसीह के एक हज़ार दो सौ साठ दिनों के समानांतर थे, और पापावाद के एक हज़ार दो सौ साठ वर्ष शिष्यों के एक हज़ार दो सौ साठ दिनों के समानांतर थे।

दोनों रेखाओं में सात गर्जनों के छिपे इतिहास की एक जैसी भविष्यसूचक संरचना है, जिसका सार्वजनिक उन्मोचन जुलाई 2023 में शुरू हुआ। यह उन्मोचन आंशिक रूप से मिलेराइट आंदोलन की पहली निराशा को पहचानने से संभव हुआ। उनकी पहली निराशा ने एक कालखंड का आरंभ किया, जिसे दस कुँवारियों के दृष्टान्त में 'प्रतीक्षा-काल' कहा गया है। यह 'प्रतीक्षा-काल' एक्सेटर, न्यू हैम्पशायर की कैम्प-मीटिंग में तब समाप्त हुआ, जब 'मध्यरात्रि की पुकार' का संदेश पूर्ण रूप से स्थापित हो गया था। एक्सेटर की वही कैम्प-मीटिंग दूसरा मार्गचिह्न बनी, जिसने फिर एक ऐसे कालखंड का आरंभ किया जिसमें 'मध्यरात्रि की पुकार' का संदेश प्रचारित किया गया, जब तक कि न्याय का तीसरा मार्गचिह्न और अंतिम निराशा आ नहीं गए।

तीन मार्गचिह्न ये थे: प्रथम निराशा, 'मध्यरात्रि की पुकार' का संदेश, और अंतिम निराशा। ये तीनों मार्गचिह्न हिब्रू शब्द "सत्य" से मेल खाते हैं, जो हिब्रू वर्णमाला के प्रथम, तेरहवें और अंतिम अक्षर का प्रतिनिधित्व करता है। प्रथम और अंतिम, दोनों का निराशा होना, अल्फा और ओमेगा के हस्ताक्षर का प्रतिनिधित्व करता है।

मिलेराइट इतिहास में बारह सौ साठ दिनों का कोई प्रत्यक्ष निरूपण नहीं है, फिर भी मिलेराइट इतिहास प्रथम आंदोलन का इतिहास है और इसलिए वह अंतिम आंदोलन का प्रतिरूप है। अंतिम आंदोलन में पहली निराशा 18 जुलाई, 2020 को आरंभ हुई, और उसका चित्रण प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में किया गया है। प्रकाशितवाक्य के ग्यारहवें अध्याय में दो गवाह मार डाले जाते हैं; यह घटना अंतिम आंदोलन में पहली निराशा को चिह्नित करती है, जिसका प्रतिरूप प्रथम आंदोलन था।

प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में, निराशा ने बारह सौ साठ दिनों की उस अवधि की शुरुआत की, जब उनकी लाशें सड़क पर पड़ी थीं, और इस प्रकार दृष्टान्त के विलंब के समय को चिह्नित किया। उनके पुनरुत्थान पर, उन्हें एक ध्वज के रूप में ऊपर उठाया जाता है, उसी समय जब रविवार के कानून का न्याय होता है। दो साक्षियों का इतिहास बारह सौ साठ दिनों की एक प्रतीकात्मक अवधि को सम्मिलित करता है।

सात गर्जनाओं के गुप्त इतिहास में तीसरे स्वर्गदूत की गति का विवरण अन्य समांतर रेखाओं की तुलना में कहीं अधिक विशिष्टता प्रदान करता है, परंतु तीसरे स्वर्गदूत की रेखा, उत्तर के सच्चे राजा की रेखा, और उत्तर के नकली राजा की रेखा—ये सभी समान भविष्यवाणी संबंधी विशेषताएँ रखती हैं: एक प्रारंभिक बिंदु, उसके बाद एक समयावधि जो एक मध्य बिंदु तक पहुँचती है, और फिर एक समयावधि जो अंत-बिंदु पर न्याय तक पहुँचती है।

एक हजार दो सौ साठ दिन सात गर्जनाओं के गुप्त इतिहास का एक प्रमुख तत्व है। प्रकाशितवाक्य के बारहवें अध्याय में एक हजार दो सौ साठ दिनों को "निर्जन स्थान" के रूप में प्रतीकित किया गया है।

और वह स्त्री मरुभूमि में भाग गई, जहाँ उसके लिये परमेश्वर ने एक स्थान तैयार किया था, ताकि वहाँ उसका एक हजार दो सौ साठ दिनों तक पालन-पोषण किया जाए। प्रकाशितवाक्य 12:6.

कलीसिया मरुभूमि में भाग गई ताकि बारह सौ साठ वर्षों तक पोप की सत्ता द्वारा पैरों तले रौंदे जाने से बच सके। चौदहवाँ पद एक और गवाही देता है।

और उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, ताकि वह जंगल में अपने स्थान पर उड़कर चली जाए, जहाँ वह सर्प के सामने से एक समय, और दो समय, और आधा समय तक पाली जाती है। प्रकाशितवाक्य 12:14.

कलीसिया अजगर और पोपशाही के उत्पीड़न से बारह सौ साठ वर्षों तक भागती रही, और इसलिए "जंगल" बारह सौ साठ दिनों का प्रतीक है। वह संख्या दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों में प्रत्यक्ष रूप से सात बार आती है, परंतु पवित्र शास्त्र में वह कई अन्य तरीकों से भी व्यक्त की गई है। हर मामले में, वह लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस के "सात गुना" का प्रतिनिधित्व करती है।

चाहे 723 ईसा पूर्व से 538 ईस्वी तक मूर्तिपूजा ने पवित्रस्थान और सेना को रौंदा हो, या पापाई सत्ता ने आध्यात्मिक यरूशलेम और उसके उपासकों को रौंदा हो, यह परमेश्वर की प्रजा के तितर-बितर होने का एक चित्रण था, जो लैव्यव्यवस्था के अध्याय पच्चीस और छब्बीस में दर्शाई गई "भूमि के सब्तों" की वाचा को परमेश्वर की प्रजा द्वारा तोड़ने के कारण हुआ। अध्याय छब्बीस में इसे परमेश्वर की वाचा का "विवाद" कहा गया है।

और मैं तुम पर तलवार ले आऊँगा, जो मेरी वाचा के विवाद का प्रतिशोध करेगी; और जब तुम अपने नगरों के भीतर इकट्ठे होगे, तब मैं तुम्हारे बीच महामारी भेजूँगा; और तुम शत्रु के हाथ में सौंपे जाओगे। लैव्यव्यवस्था 26:25.

परमेश्वर की वाचा के विरुद्ध विद्रोह ने परमेश्वर की प्रजा पर वह गुलामी और तितर-बितर होना ला दिया, जिसे "मेरी वाचा का झगड़ा" के रूप में दर्शाया गया है। उस दंड को समझे बिना—जिसे दानिय्येल मूसा का "शाप" और "शपथ" कहता है और जिसे "मेरी वाचा का झगड़ा" भी कहा जाता है—कोई व्यक्ति दानिय्येल अध्याय नौ में प्रस्तुत मसीह के कार्य के गहरे अर्थ को नहीं देख पाता। एलेन व्हाइट की रचनाओं में, लाओदिकिया की अंधता में पड़ी परमेश्वर की प्रजा के बारे में एक सुसंगत मूल्यांकन यह है कि वे "कारण से परिणाम तक तर्क" नहीं कर सकते। आप यह दावा कर सकते हैं कि आप अंधकार युग के बारह सौ साठ वर्षों को समझते हैं, परंतु यदि आप उस रौंदे जाने का "कारण" नहीं जानते, तो आप अंधे हैं।

और वह एक सप्ताह के लिए बहुतांश के साथ वाचा को दृढ़ करेगा; और सप्ताह के मध्य में वह बलि और अर्पण को समाप्त कर देगा, और घृणित बातों के फैलाव के कारण वह उसे उजाड़ डालेगा, जब तक अंत न हो जाए; और जो ठहराया गया है वह उस उजाड़े हुए पर उंडेला जाएगा। दानिय्येल 9:27.

मसीह द्वारा वाचा की पुष्टि "उसकी वाचा के विवाद" से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। "शाप" की अवधि पच्चीस सौ बीस वर्ष थी, और उसी वाचा की मसीह द्वारा की गई पुष्टि की अवधि पच्चीस सौ बीस दिन थी। इब्रानी शब्द "सत्य" के अनुरूप, जो सात गर्जनाओं के गुप्त इतिहास की संरचना प्रदान करता है, वह भविष्यवाणी का सप्ताह जिसमें मसीह को अपनी वाचा की पुष्टि करनी थी, तीन मील के पत्थरों से युक्त था, जो इब्रानी वर्णमाला के प्रथम, तेरहवें और अंतिम अक्षरों द्वारा दर्शाए जाते हैं।

सप्ताह का पहला मार्गचिह्न उनका बपतिस्मा था, दूसरा मार्गचिह्न क्रूस था, और अंतिम स्तेफनुस की मृत्यु थी। लैव्यव्यवस्था 26 के "सात गुना" को देखने से इंकार करना—जैसे स्वर्गदूतों ने विलियम मिलर का मार्गदर्शन किया था कि वे "सात गुना" देखें—उस भविष्यवाणी को पूरी तरह देखने की क्षमता ही समाप्त कर देता है, जिसमें मसीह ने अपना लहू बहाया और उसी वाचा की पुष्टि की जिसे उनकी शाब्दिक प्राचीन प्रजा ने अस्वीकार कर दिया था। अंततः जो भी उद्धार पाएगा, उसके पास "सत्य" की समझ केवल आंशिक और अपूर्ण होगी। पर कोई भी व्यक्ति जो जान-बूझकर "सत्य" को देखने से इंकार करता है, उद्धार नहीं पाता। पिता तक पहुँचने का एक ही मार्ग है, और वह यीशु के द्वारा है, और यीशु ही "सत्य" है।

इस पर विचार करना सार्थक है, क्योंकि यह लैव्यव्यवस्था अध्याय 25 और 26 की वाचा की बात करती है। "सात गुना" का "शाप" प्राचीन शाब्दिक इस्त्राएल पर इसलिए आया क्योंकि भूमि को विश्राम देने और जुबली संबंधी आज्ञाओं का पालन करने के निर्देशों को लागू करने में वे अनिच्छुक थे। यह उपेक्षा का पाप था। उन पर यह शाप इसलिए आया क्योंकि उन्होंने वह काम छोड़ दिया था जिसे करने की उन्हें आज्ञा दी गई थी; न कि इसलिए कि उन्होंने किसी आज्ञा को सीधे तोड़ा था, जैसे "तू हत्या न करना" या "तू चोरी न करना"। उन्होंने बस उन निर्देशों की अनदेखी की जो भूमि को विश्राम देने से संबंधित थे। जो एडवेंटिस्ट किसी भी अपवित्र कारण से "सात गुना" को (जिसकी खोज के लिए स्वर्गदूतों ने विलियम मिलर का मार्गदर्शन किया) नहीं मानते, उन्होंने बस कभी सचमुच सत्य की पड़ताल करने के लिए समय ही नहीं निकाला है, और प्राचीन शाब्दिक इस्त्राएल ने जिस उसी वाचा-संबंधी जानकारी की अनदेखी की थी, उसी की उपेक्षा करके वे भी उपेक्षा के उसी प्रकार के विद्रोह को अंजाम दे रहे हैं। आरंभ अंत को दर्शाता है।

प्रकाशितवाक्य 12 में 'निर्जन स्थान' के रूप में पहचाने गए बारह सौ साठ दिन, 'सात काल' का प्रतीक हैं। मसीह की सेवकाई के बारह सौ साठ दिन और शिष्यों की सेवकाई के बारह सौ साठ दिन, दोनों उस सम्पूर्ण सप्ताह का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें वाचा की पुष्टि हो रही थी। जितने बारह सौ साठ वर्षों तक मूर्तिपूजावाद ने परमेश्वर के लोगों को रौंदा, और जितने बारह सौ साठ वर्षों तक पोपतंत्र ने परमेश्वर के लोगों को रौंदा, वे दोनों मिलकर मूसा के शाप के सम्पूर्ण 'सात काल' का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रकाशितवाक्य ग्यारह में, बारह सौ साठ दिनों के बाद, मरी हुई हड्डियों को फिर से जीवन दिया जाता है ताकि वे एक लाख चवालीस हजार के रूप में वाचा में प्रवेश करें। परंतु उस वाचा के संबंध को पूरा करने के लिए, उनके लिए यह आवश्यक है कि वे वाचा की शर्तों को पूरा करें, जैसे दानिय्येल ने नौवें अध्याय में किया था। 'सात काल' की वाचा की शर्तों में उन लोगों के लिए विशिष्ट निर्देश हैं जो अपने को शत्रु की भूमि में पाते हैं। जब जो लोग इस वास्तविकता के प्रति जागते हैं कि वे बिखेर दिए गए हैं और प्रभु के पास लौटना चाहते हैं, तो लैव्यव्यवस्था छब्बीस यह निर्देश देती है कि उन्हें कैसे लौटना है।

और तुम में से जो बचे रहेंगे, वे अपने शत्रुओं के देशों में अपने अधर्म के कारण घुलते रहेंगे; और अपने पितरों के अधर्म के कारण भी वे उनके साथ घुलते रहेंगे। यदि वे अपने अधर्म और अपने पितरों के अधर्म को, उस अपराध सहित जिसके द्वारा उन्होंने मेरे विरुद्ध अपराध किया है, और यह भी कि वे मेरे विरोध में चलते रहे हैं, स्वीकार करें; और यह भी कि मैं भी उनके विरोध में चला हूँ, और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में ले आया हूँ; तो यदि तब उनके खतनारहित हृदय नम्र हो जाएँ, और तब वे अपने अधर्म के दण्ड को स्वीकार करें: तब मैं याकूब के साथ की अपनी वाचा को स्मरण करूँगा, और इसहाक के साथ की अपनी वाचा को भी, और इब्राहीम के साथ की अपनी वाचा को भी स्मरण करूँगा; और मैं उस देश को स्मरण करूँगा। लैव्यव्यवस्था 26:39-42।

धर्मग्रंथों में "pine away" अभिव्यक्ति का अर्थ है घुल जाना, सड़-गल जाना और पूरी तरह समाप्त हो जाना। "Pine away" का मतलब है क्षीण होते-होते मृत, सूखी हड्डियों में बदल जाना। और यह निर्देश मृत्यु की ओर संकेत करता है, क्योंकि यह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी अवस्था के प्रति जागकर समझते हैं कि वे "अपने शत्रुओं की भूमि में" हैं।

नाश किया जाने वाला अंतिम शत्रु मृत्यु है। 1 कुरिन्थियों 15:26.

18 जुलाई, 2020 को तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में पहली निराशा घटी। पवित्र भविष्यवाणी-संबंधी सुधार रेखाओं में अन्य सभी पहली निराशाओं में उसकी मिसाल मिलती है। यहजेकेल अध्याय सैंतीस के अनुसार, अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा इतनी घुल-बिखर, भ्रष्ट और नष्ट हो चुकी होगी कि वे केवल मृत, सूखी हड्डियों की एक घाटी मात्र रह जाएंगी। वे शत्रु की भूमि में हैं, जो मृत्यु की भूमि है। प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में दो गवाहों को मार डाला गया और उन्हें सड़क पर छोड़ दिया गया। सभी भविष्यद्वक्ता एक-दूसरे से सहमत हैं। अतः मूसा उन लोगों से बोल रहे हैं जो यहजेकेल की घाटी से होकर गुजरने वाली सड़क पर मृत पड़े हैं। अपनी निराश अवस्था में उन्हें यिर्मयाह के माध्यम से निर्देश दिए जाते हैं।

इसलिए प्रभु यूँ कहता है: यदि तू लौट आए, तो मैं तुझे फिर से लाऊँगा, और तू मेरे सामने खड़ा होगा; और यदि तू निकृष्ट में से बहुमूल्य को अलग करे, तो तू मेरे मुख के समान होगा। वे तेरी ओर लौटें, पर तू उनकी ओर न लौटना। यिर्मयाह 15:19.

यिर्मयाह को बताया गया है कि यदि वह परमेश्वर की ओर से बोलना चाहता है, तो उसे लौटना होगा, और ऐसा करते हुए उसे अनमोल को निकृष्ट से अलग करना होगा। उस खंड का संदर्भ स्पष्ट करता है कि 'निकृष्ट' वे लोग हैं जिनके पास उसे वापस नहीं जाना है। जब उस खंड में उसे उसकी निराश अवस्था में चित्रित किया गया है, वह बताता है कि वह अकेला था।

मैं हँसी उड़ाने वालों की सभा में नहीं बैठा, और न मैं आनन्दित हुआ; तेरे हाथ के कारण मैं अकेला बैठा, क्योंकि तूने मुझे रोष से भर दिया है। यिर्मयाह 15:17.

यिर्मयाह "उपहास करने वालों की सभा" में नहीं बैठा था, क्योंकि वह अकेला बैठा था। उसे उन घृणित लोगों के पास नहीं लौटना था, जो उपहास करने वालों की सभा है। 1863 में, एडवेंटवाद ने "उपहास करने वालों की सभा" की ओर लौटना तब शुरू किया, जब उसने मूसा के "सात बार" को अस्वीकार करने के लिए बाबुल की पुत्रियों की बाइबिलीय पद्धति अपना ली। परंतु यिर्मयाह मिलराइट इतिहास की अपेक्षा अधिक विशिष्ट रूप से अंतिम दिनों के विषय में बोल रहा है। जब मृत हड्डियों की घाटी के लोग यह समझकर जाग उठते हैं कि वे शत्रुओं की भूमि में हैं, तब उन्हें उन लोगों के पास कभी नहीं लौटना चाहिए जिन्होंने सड़क पर उनकी मृत्यु पर खुशियाँ मनाईं। वह समूह यिर्मयाह के पास लौट सकता है, पर वह उनके पास नहीं लौट सकता।

परन्तु यदि उन्हें लौटना है, तो उन्हें मूसा द्वारा दिए गए उन निर्देशों को भी पूरा करना होगा जो "सात समय" से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में सड़क पर मृत बताए गए लोग साढ़े तीन दिन तक मृत रहते हैं, जो भविष्यवाणी की दृष्टि से "मरुभूमि" है।

इसीलिए मृतकों का प्रारंभिक जागरण एक ऐसे संदेश से संपन्न होता है, जो हड्डियों को आपस में जोड़ देता है, लेकिन वे अभी जीवित नहीं होते। उन्हें एक शक्तिशाली सेना में बदलने के लिए चारों पवनों का संदेश, जो मुहर लगाने वाला संदेश है, आवश्यक होता है। उन्हें एक साथ लाने वाला पहला संदेश एक "आवाज़" से आता है।

सान्त्वना दो, सान्त्वना दो मेरी प्रजा को, तुम्हारा परमेश्वर कहता है। येरूशलेम से सान्त्वना के शब्द बोलो और उससे पुकारकर कहो कि उसकी कठिन सेवा समाप्त हो गई है, उसका अधर्म क्षमा किया गया है; क्योंकि उसने अपने सब पापों के लिये प्रभु के हाथ से दोगुना दण्ड पाया है। मरुभूमि में पुकारने वाले की आवाज़: प्रभु का मार्ग तैयार करो; मरुभूमि में हमारे परमेश्वर के लिये एक राजमार्ग सीधा करो। हर घाटी ऊँची की जाएगी, और हर

पर्वत और टीला नीचा किया जाएगा; टेढ़े-मेढ़े मार्ग सीधे किए जाएंगे, और ऊबड़-खाबड़ स्थान समतल किए जाएंगे। यशायाह 40:1-4.

आवाज़ मरुभूमि से आती है, जो "सात समय" के विखराव का प्रतीक है। वह आवाज़ मरुभूमि में ही है, क्योंकि यहजेकेल को भी मृत हड्डियों की घाटी में ले जाया गया था। वह उसी घाटी से गवाही दे रहा था, दूर से नहीं।

प्रभु का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे प्रभु की आत्मा में बाहर ले जाकर उस घाटी के बीच में बैठा दिया, जो हड्डियों से भरी हुई थी। यहजेकेल 37:1.

घाटी तीन दिन और आधे की मरुभूमि है। उस आवाज़ का वचन यह है कि यरूशलेम का अधर्म क्षमा किया गया है और उसकी लड़ाई समाप्त हो गई है। यह वचन अंतिम दिनों में पूर्ण होने वाले एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का प्रतिनिधित्व करता है। परंतु उसके अधर्म की क्षमा उसके सारे पापों के लिए "दोगुना" प्राप्त करने के साथ जुड़ी हुई है। मूसा द्वारा प्रस्तुत उपाय यह मांग करता है कि वे न केवल अपने अधर्मों की, बल्कि अपने पितरों के अधर्मों की भी स्वीकारोक्ति करें। यदि वे उस आज्ञा को पूरा करेंगे, तो उनका अधर्म क्षमा कर दिया जाएगा।

हम इन सत्यों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

हाँ, समस्त इस्राएल ने तेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया है, यहाँ तक कि उससे हटकर, ताकि वे तेरी वाणी का पालन न करें; इसलिए शाप हम पर उंडेला गया है, और वह शपथ भी जो परमेश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी है, क्योंकि हमने उसके विरुद्ध पाप किया है। और उसने अपने वचनों की पुष्टि कर दी, जो उसने हमारे विरुद्ध और हमारे उन न्यायियों के विरुद्ध, जो हमारा न्याय करते थे, कहे थे, हमारे ऊपर बड़ी विपत्ति लाकर; क्योंकि समस्त आकाश के नीचे जितना यरूशलेम पर किया गया है, वैसा कहीं नहीं किया गया। जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, यह सारा अनर्थ हम पर आ पड़ा है; फिर भी हमने अपने प्रभु परमेश्वर के सम्मुख अपनी प्रार्थना नहीं की, कि हम अपनी अधर्मताओं से फिरें और तेरी सच्चाई को समझें। दानियेल 9:11-13.